

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st JUNE 2019



केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची

धा रुपया

मुखेल संपादक
सुरेश ए. शेणै

कोशाधिकारि
के. विजयन

वाँगडी
प्रो. जी. मोहन राव
9446369771

न्यायोपदेशक
अड.वी.एन. बसन्त कुमार

प्रचार-प्रसार
टी. आर. सदानन्द भट

Layout by :
K. Santhosh
Mob : 9895212521

मुखचित्र : कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर अनि अनुग्रह चारिटेबिळ ट्रस्ट हांगेले संयुक्ताभिमुख्यारि "कोंकणी सप्ताह - 2019" मेय 6 थकून 12 थांयि कोच्चींय प्रभाकर ज्योती सभाघरांतु चम्कीलें। - एदीं चित्र
आभार - एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

प्रति - ₹ 10/-
वार्षीक - ₹ 100/-

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची

SPANDAN
Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 8 अंक : 6 1941 ज्येष्ठ

संपादकीय

बालसाहित्य जायि !

मस्त संस्थ्यो अस्स। मस्त प्रवर्तकयि अस्सय। जल्यारीयि इतुलीं वर्ष जाव्नु घेव्नूयि जांव्का जल्लेले लेकान कोंकणी वड्डलेना मू म्होणु एकेकवळे दिसता।

तक्का कारण, अम्का दिस्ता, बालसाहित्याचो उणावु जावयेत म्होणु। बालसाहित्य म्हणतना चेर्डूवांक तें आकर्षण करता। आवसु-बप्सूंकयि तें वच्चूनु चेर्डूवांक संगून दिंवचाक दिस्तलें। दोगालेंयि - चेर्डूवालेंयि म्हलगड्यालेंयि - वच्चूक अस्सिलि इच्छा चोणु चोणु एत्तली। ती इच्छा जागृत जल्यारि मगीरि तें अभ्यासु जत्तोलो। इच्छा उत्साहान्तु परिवर्तित जत्तली ('Reading Habit' निर्माण जत्तलें)।

दिक्कून बरोवप्यानि बालसाहित्याचेरि चड ध्यान दिल्यारि चाँग अस्तलें म्होणु दिस्ता। चड चड बालसाहित्य - काणियो, सान सान गीन्त इत्यादि - निर्माण जावो, कोंकणीक चड चड वाचपेलि मेळो म्होणु आशा पांवतायि।

जय कोंकणी !!!

कोच्ची, 01-06-2019 सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.

कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर अनि अनुग्रहा चारिटबिळ ट्रस्ट हंगेले संयुक्ताभिमुख्यारि “कोंकणी सप्ताह - 2019” मेय 6 थकून 12 थांयि कोच्चीचे प्रभाकर ज्योती सभाघरांतु चम्कीलें। श्यामळा प्रभु (कोच्ची नगरसभांग) हन्नि उद्घाटन केल्लें। वेदीर दवोर्नु कोंकणी विविध मेखलेचे प्रवर्तनान्तु योगदान दीव्नु एंव्चे विजयकुमार एन. पै (नाटक), एन. भाधव रावु (कविता) अनि सुरेश वी. शेणै (कविता) हांका आदरु केल्लो। अंतिम दिस्सा हस्तलिखित स्मरणिका “अंकूरी” चे प्रकाशनयि जल्लें।

दक्षिण कोंकणी उतरावळि (A Southern Konkani Vocabulary Collection) - एक On Line शब्दकोश (कोंकणी-इंग्ळीश, इंग्ळीश-कोंकणी) पळ्ळूरचे सूर्या अशोक, पूतु प्रणव अशोक एकमेळ्नु तैयार केल्यां। चोय्यायि - http://www.konkanivocabulary.in/

12.05.19, टाउण हाळ, मंगळूरु :- कोंकणी भाशा मंडल कर्नाटका (रि.) संस्थेन “कोंकणी श्री रामगीता” कार्यक्रमु आयोजित केल्लो। रामायणाचेरि आधारित डॉ. मनोहरराय सरदेसाय हन्नि 59 वर्ष फूडे गोवाचे ‘Opinion Poll’ चे समयारि बरेयलेली ह्यी गीता “स्वरश्री गोवा” हन्नि प्रस्तुत केल्ली।

डॉ. टी.एम.ए. पै फऊण्डेषन उत्तम कृति पुरस्कार - 2017

“श्री राम चरित” - विश्वनाथ शेठ

प्रोत्साहन पुरस्कार - 1) “साउदीन्तुले ते दीस” - रूपाली माउजो कीरतनी,

2) “साहित्य धारा” - डॉ. हनुमन्त सी चोपडेकर

साहित्य अकादेमी अनि कोंकणी * 27.4.19, ईमानुवल हॉळ, सैंट अल्बर्टस कोळेज, एरणाकुळम :- साहित्य अकादेमी, आल्बर्टियन सेंटर फॉर कल्चरल हेरिटेज, एरणाकुळम अनि पी.जी. कामत फौंडेशन, एरणाकुळम एकमेळ्नु “साहित्य वेदी : रवीन्द्र केळेकार - एक वाचन” कार्यक्रमु घडोव्नु हळ्ळो। चंद्रबाबु यु. शेट्टी, के. गोकुलदास प्रभु, पय्यन्नूर रमेश पै, अमोघ जयराज, जी. मोहन रावु अनि अजय कामत हन्नि कोंकणी भाशे तरपेन भागु घेत्तलो। उपरांते श्री रवीन्द्र केळेकार हस्वचित्राचे प्रदर्शनयि जल्लें।

* 26.4.19 साहित्य अकादमी, Southern Regional Office, बंगळूरु :- “Literary Forum” खाल Cultural Exchange through Konkani-Kannada Translations कार्यक्रमु घडेय्लो।

संत केशवदासालि हितोपदेश कथा - 47

प्रो. वी. शिवानन्द भट,
पंचाब्जपुरम

आत्मसमर्पण-गजेन्द्रालें दृष्टान्त

गजेन्द्र नावांचो एकु गजराज अस्सिलो। तका हजार राणियो अस्सिल्लीं। राण्यांसहित ताणे व्होड एक सरोवरान्तु न्हांवप अस्सिल्लें। ग्रीष्मान्तुले एक दिवसा राण्यांसहित तो न्हत्तालो अनी सोण्डाळेन्तु उद्दाक काणु तंगेले अंगारि फप्पूणु आनन्दित जत्तालो। सहसा पोन्दाक थकूनु एक सिसरेन गजेन्द्राले पय्याक धोर्नु तका सरोवराचे पोन्दाक व्होरुक आरांभिलें। सिसरेचे तोण्णान्तु थकूनु पायु सोडोंव्चाक ताणे घोर प्रयत्न केल्लें, परन्तु आखेर तो श्रान्त अनी अशक्त जल्लो। दुर्भाग्यवश तगेलि राण्यों एकले मगल्यान एकि तका तगेले विधिवशान्तु सोणु गेल्लीं। अतां तगेलें शरीरबल सरलें। हे अवस्थेरि तका निज प्रयत्नाची निष्फलता मनां जल्ली अनी देवाक हांव आत्मसमर्पण करतां म्हणु लेकूनु सरोवरा ऊंच पोंव्वें एक पद्माक्ष सोंण्डाळेन काणु तें ऊंच धोर्नु बहुभक्तीन देवाक उळदीलो, "राम !"। 'रा' अनि 'म' हें दोनि अक्षर म्होणूक कितलो समयु जायि ? श्रीमद् भागवतान्तु संगील्यां कि 'राम', हें दोनि अक्षर म्होणु सोरचे फूडे महाविष्णून धाव्नु पांव्नु सिसरेक मार्नु गजेन्द्राक रक्कीलो। हि एकि महान प्रतीकात्मक कथा। कथेन्तुलो गजेन्द्रु एकु अहंकारी आत्मा। अम्मी युवा, आरोग्यवन्त अनी संपन्न अस्सुपर्यन्त अम्का दिसतलें अम्का सर्व स्नेहु दित्ताय म्हणु, फलस्वरूप अम्मी एकलगेन अहंकारु करतलीं। मरणासन्न समयारि अम्का रक्कूक कोण अस्सुन्ना। मित्र सोणु वत्तले अनी बन्धु-बान्धव गायब जत्तले। शरीर सरि निर्बल जत्तलें। कथेन्तुले गजेन्द्रान देवाले शरणान्तु गेल्यावरि अम्मी परमात्माक शरण वत्तलीं। ते आत्मसमर्पण समयारि परमात्मा अम्गेले सहायाक पंवता, मृत्यूक नाशु करता अनि मृत्यूचे दंष्ट्रान्तु थकूनु अम्का मुक्त करता - परमात्माले दयेन मेळचि मुक्ति अथवा मोक्षु होचि।

सन्देश - मानव-जीवनान्तु पुरुष-प्रयत्नु अत्यावश्यक। प्रयत्न सर्व कोर्नु जाव्नु आत्मसमर्पण, होचि मोक्षाचो अन्तिम उपायु। देवाले अनुग्रहान असाध्य निःसंशय साध्य जत्ता।

कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर आयोजित प्रतिमास कोंकणी कविसंगमं "विकारि-चैत्र" 27.4.19 क अनि "विकारि-वैशाख" 25.5.19 क सुशीला टी. भट हंगेले घरकडे दवोर्नु जल्लें।

पुस्तक प्रकाशन * 9.5.19 ब्लॉक बॉक्स, रवींद्र भवन, मडगांव (गोंय) - 'भंगराळि जीण' (आत्मकथा) - माणिकराव गावणेंकार।

मातृ वन्दन



- प्रो. वसुन्धरा कामत, आलपुषा

नमन करताय आमी मातृवर्गांक
वात्सल्य संपूर्ण क्षमा-त्याग संपन्न
नमन करताय आमी नारी जनांक
शक्तिस्वरूपिण्यांक धर्मसंरक्षकांक ।

तिगेले उदरांतु सर्वय जन्माक येत्ताय
जन्मु दीव्नु वाडोव्नु हडच्याक मस्त दूकी ती भोगीता
तांगेलो संस्कारु तिजे निमित्ति वाडता
स्तन्य-पान तांका दीव्नु तांका ती व्होड करता

आवसूली भास चेरडु शिकता,
आवसूली उतरां तन्नी धरताय
तशी तीं वडून येताय, संस्कारु तांका मेळ्ता
धन्य-धन्य मातृवर्ग धन्य-धन्य नारीशक्ति
तांचेरी आभारी लोकू तांका सर्वय मानु दित्ताय

विद्या-स्वरूपिणी जाव्नु ब्रह्मा ओटु ती रबील्या
श्रीयुक्त लक्ष्मी जाव्नु विष्णूली पाद-सेवा करता
दुष्टांक नाशु कोरची दुर्गा देवी रूपान
महादेवाली अर्धांगिनी उमा-महेश्वरी म्हण्ताय

नारी-जन सर्वय देवीले प्रतिबिम्ब
सृष्टि परिपालन संहारु तीची करता
घरांतु ती गृहलक्ष्मी, राज्यान्तु ती राजलक्ष्मी
सर्वैश्वर्य संपन्न मूर्ती, शांति-समाधान दिवची

धर्मपत्नी रूपान भर्तृसेवा तिगेली निष्ठा
सत्-संतन धर्म प्रजा संरक्षण मातृधर्म
म्हावु-म्हायि बन्धु जनाली सेवा तीवेय मनान करता
आमगेलो आचारु-संस्कारु रकून घेत्ता दाकोव्न दित्ता

गुरु-भक्ति, देव-भक्ति, समाज बोध वाडोवन हाडता
स्त्री शक्ति होडि शक्ति - तिजे समान ना मू शक्ति
प्रपञ्च-धारण शक्ति क्षमा-स्नेह-दया मूर्ती
आमचे भित्तरि अशिल्ली शक्ति जाण जयाय नारी शक्ति

नारी चुकल्यारी धर्मु वत्ता तजान कुला नाशु जत्ता
पितृ-देव दोष येत्ता पतनाक कारण जत्ता
जागृत जय्याय नारीजन समाजाचे रक्षण करयाय
आमगेली मर्याद रकून घेय्याय धर्म परिपालन करयाय
गोड-गोड उल्लोव्नु मेळाय कोंकण भासे प्रचारु करयाय
ग्राम-सभेक वाडोव्नु हाडाय, हरि-गुरु सेवा करयाय ।

संत कबीरदास दोहा -



एन. लक्ष्मण मल्या, कोच्ची

"बाँबी कूटे बावरे, साँप न मारा जाय।
मूरख बाँबी ना डसे, सर्प सबनको खाय।।"

पिशचा ! तू सर्पाक मरचे सोणु बीळाक मर्ता। अरे मूर्ख ! बीळ प्राण्याक चब्बीना। जल्यारि सर्पु सग्गटांक ध्वंसन करता।



कोंकणी सप्ताहु

- कु. अशुतोष डी. किणी,चेन्नै

हांव अयलो कोच्ची रब्बूक
हांवे दिक्कीले कोच्ची आराट
हांव रब्बीलो कोच्ची अक्काथंय
हांव गेल्लो कोंकणी सप्ताहाक

मक्का चांग दिस्सले ती
शब्दाची परिवाराची नांवा निस्सणि
दुसरे दिस्सा हांव सिक्कीलो
कोंकणी अंकांचे नव्वँ एक थकून धा

तिसरे दिस्सा केल्ली हांवे एकी
मस्सळी ती, दोनि मिनिटाचि
तस्सी मिग्गेले सात दीस गेल्ले
दोळे धंप्पून विस्कळांवचे फूडें

मिग्गेले अप्पाक हांवे फोण कोरनु
सांगीले लगी वर्षाकय हांव एत्तोलो
मई मासांतुले ये सप्ताहाक
अनीकय चड कोंकणी सिक्कूचाक।

आरती दत्तात्रेयाक

- आर. एस. भास्कर, कोच्ची

आरती उंवाळूं
मंगळमूर्तेक
त्रिमूर्तिस्वरूपाक
श्रीदत्तात्रेयाक

आरती उंवाळूं
गदापद्मधारीक
त्रिशूलधारीक
श्री त्रिगुणमूर्तेक

आरती उंवाळूं
शंखचक्रधारीक
कमण्डळ वाहकाक
श्रीसगुणमूर्तेक

आरती उंवाळूं
ऐश्वर्यदायकाक
ज्ञानसागराक
श्री दत्तदिगंबराक

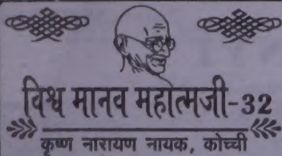
चौपदी

- एन. सदानन्द कम्मत, कोच्ची

गायि दित्ता दूद
दुहानि करतायि ताक
ताक गण्टून लोणि
लोणि कडोव्नु तूप।।

आत्मीय

आत्मा रूपाकार रहित जल्ले पसावत
देश-कालातीत आनि अनन्त खंय।



"शत्रूंक क्षमादान"

गान्धीजीले जीवितान्तु थाकून आमका सिक्रूयात जालोलो एक स्वभाव विशेष तं क्षमा कोर्चि सन्नधता। दक्षिण आफ्रिक्येन्तु आसतना ये मस्त वळे अनुभसल्यां। सरकार थांगाचे भारतीयांक चांगि पीडा किर्लायतालें। तजे वयरि तन्नि एकु नेमु हळ्ळो। "थांगाचे भारतीयानि नांव सरकाराकडे पन्जीकृत कोर्का, हाथबोट्टां रूपांकन छापका...।" मारामारि केल्लेल्यांक बाधक कोर्चो अस्सिलो तो नेमु। गान्धीजीन सामान्य जन सेयत विरोध प्रकटन आरांभीलें। सासांलेकान भारतीयांक धोर्नु कारागृहान्तु गल्ले; तन्तु गान्धीजीय अस्सिलो। मगमगीरि धोर्नु हाडतल्यां खातिरि स्थायु ना जालो। सर्कार मेधावि जनरल स्मटसान एकि युक्ति कळ्ळि। "तेदोळ धर्लेले सगटांक सोडीन, ताजे उपरान्ते तें नवें विज्ञापनयि मागल्यान ताणीन, पुण वुणे जाणानि पुणीय मुकारि सोर्नु नेम पालन कोर्नु दकौंका।" प्रश्न परिहार तस्सि जल्यारीयि जावो म्हळेले प्रतीक्षेन गान्धीजीन शर्त स्वीकार केलें। जनावराक सन्त सांगून लागि काडूं म्हुण गान्धीजीन अठैलें। सर्कारालागीयि सोडि धरि कोर्नु मुकारि वचाक देकीयि अस्सिलि। एदो लोकु ओट्टु मेळनु गान्धीजी पंजीकरणाक बायर सर्लो। पुण पठाण संघान वाट अडायली। धैर्याक अभिमानाक नांव पाविल्लो तं पठान विभागु। इम्मेक सरि मगल्यान सोर्नु दिवंचाक नज म्हुण तन्नि हठ धर्ले। गान्धीजीलो सदुदेश समझूनत्तिलें पठान संघा नेता मिर आलमान गान्धीजीले अंगारि हाथ केल्लो ; मत्यारि चोक्का पेटु लागून गान्धीजी अबोध भुंयचेरि पळ्ळो। फूडे मर्लोलो गोर्यानि जल्यारि ह्या फन्ता अनुयायि विभागानचि क्षोभ दकैलो। गान्धीजीक उभार्नु काणु लागी मित्रा घरकडे निद्दायलो। कडियानि पठाणांक खोड्यान्तु कळ्ळे। बोध प्राप्ति एंवचाकयि पठाणा विरुध एकक्षर सांगूना म्हळे गान्धीजीन ! पेट्टु व्होडना, जनालें ऐक्य लाचार जावनात्तिले राकायि म्हुण गान्धीजीन हृदयगम विनन्ति केल्लि। मार्लेले मिर आलमालें हर्दें कर्गलें। शोकग्रस्त ताणे एवनु गान्धीजी लागि क्षमा मागून मैत्रि पुनःस्थापन केल्लि। गान्धीजीन ताका क्षमादान दिल्लें। पळ्ळेले मन्चारि पोणु गान्धीजीन पंजीकरण केल्लें, बोटां मुद्रण दिल्लें। पुण मागिरि नेम मगल्यान कण्णा म्होणचाकयि गान्धीजीन दृढ गंभीर जावनु तन्नि प्रदान केल्लेलिं सग्ग प्रमाण पत्रं उज्जो गल्लीं। सर्काराक बेट्टु लागलो। ❋



नेता



- कु. अञ्जली किणी, कोच्ची

अपण्याले स्वार्थ मगलान सोणु
कोणाले मनान्तु केवल जनाले हित
तगेले मगलान आमका सोरया
तोचि नेता आमका उचित।

कोणाक काडूक जत्ता कठिन निर्णय
व्होड संकट दिकतेरि मुकार
तोचि तां आमगेलो धीर नायकु
उळ्दाय तगेले जय जय कार।

सावळेन्तु तजे रबिल्ले जनांक
केदनाय मेळ्ता सुरक्षा
सीमा पार कोर्नु आयलेले शत्रूंक
धैर्यान दित्ता तो शिक्षा।

मगलांचान उतलेंचि खोंपिल्यारीय
हर्देय विस्कळावनु तो राबता निर्भय
ताणे दकयलेले वट्टेरि आमका वच्या
तोचि दित्ता आमका अभय।

विडंबनात्मक पद प्रयोग पळया

- नागेष अण्वेकर, कारवार

वैर गेलो	आड पडलों
धाट जालो	दीग निद कडलो
मोरून गेलो	पोठळी भांदलो
खांदार चमकलो	जींव सोडलो
संसार सोडलो	ऐक्य जालो
नीसरलो	ऐक्य जालो
वैर चमकलो	मृत्यु गडले
वैर तिगून गेलो	मृत जालो

कोंकणी खबरेक चोय्यायि/पळेयात

facebook

कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर

कोंकणी - മലയാളം - English

- शैलेष कम्मत. एम., कोच्ची

बीं - വിത്ത് - Seed
थांबॅ - ഞാറ് - Young Paddy plant fit for transplanting
रोंपि - ചെറിയ തൈ - Small plant
सर्सि - തൈ - Young Plant
झाड - ചെടി - Plant

देवी, ये आयक, यो आयक

- लता रंग मल्लन, माळा

अम्मा ! अम्मि मन्त्र दुक्कूनु
अप्पेय्ताय मू तुक्का
देवि, अप्पेय्ताय मू तुक्का
शान्ति, ती शान्ती मन्त्रांतु
शान्ति ती विदूर मू अम्का
तुग्गेलि दया माया अनीक ममता
शाश्वत जांव्का अम्का
देवी शाश्वत जांव्का अम्का (अम्मा)

अनुदिन अनुदिन
तुग्गेले ध्यान केल्यारि
मेळ्का मू समाधान
इत्याक देवी दीना तू अम्का
शान्ति समाधान, अम्का
शान्ति समाधान (अम्मा)

मनुष्यजन्मु दिल्लो तूवे
कष्टांतु घालूक वे ?
भोग्गूनु भोग्गूनु पूरो जल्ले मू
अनीक पुणेयि सुख दीवन्ना वे ?
देवी, अनीक पुणेयि
सुख दिवन्ना वे ? (अम्मा)

मिर्याकोणालि काणि

- सुरेश वी.शेणै, कोच्ची

अयकूका मिगेलि सानि काणि
चोवदाय लोकान्तु व्होळ्ळि काणि
सयबाले गांवान्तु भोंव्चि काणि
हस्सूनु हस्सूनु मोर्चि काणि

लेकिलें सयबान व्होरूक मक्का
चोरायेन मक्का व्हेल्लि थंगा
लेकिलें सयबान वड्डोंव्चाक मक्का
तग्गेले गांवान्तु वोयलि मक्का

विचित्र फल मेळ्ळें तंका
हस्सूनु हस्सूनु मेल्लीं हंगा
लेकिलें मोल्लाक व्होरूक मक्का
मिगेलें मोल कॅळ्ळें तंका

मिगेलें रूप, वडकूळें रूप
मिगेलें नाम सुपरिचित
मिगेलें घर पर्वता ऊंच
मिगेलें कुल श्रेष्ठ कुल



मिगेलें नाम मिर्याकोणु
तुम्गेलें घरकड्चो मुख्य नाथु
तुम्गेलें आहारान्तु मुख्य स्थान
मेळ्ळेंलें मिगेलें जन्मा सुकृत



जीवाचो प्रयाण



- एन. माधव रावु, कोच्ची

देह सोणु जीवु वत्ता सूर्यमण्डलान्तु
कर्मफलाचे पुण्य भोगून जत्ता तका आनन्दु।
पुण्य सग, सरतना तो,
मर्त्य लोकाक प्रयाण करता।
पाप कर्माचे फल भोगूक
मनुष्य जन्मु कडता।।

सूर्यमण्डल सोणु तो चन्द्रमण्डलां एत्ता
हिम जला वटेन तो भूमी स्पर्श करता।
मनुष्य स्त्री-पुरुषान खांव्चे आहारान्तुल्यान
संचार कोरनु स्त्रीचे योनींतु पडता।

एक दिस्सीं तो शुक्ल बिन्दु घट्टि जत्ता
पांच रात्रीन जीवाक एत्ता बुलबुधाकारु।
सात दिस्सीं एत्ता तक्का मांस पेशि
पंचेवीस रात्रीन अंग प्रत्यंग फुटून एत्तायि।।

गळो, मत्ते, भूझ, फाटी भेंड,
पोट यें सग एक महिनेन जत्ता।
पया पावलॅ, पया मुट्टु, अस्ति
वस्ति क्रमारि जत्ता दोनि मस्सीनि।।

तिन्नी मासान्तु अंगांक सन्धि जत्ता
पयांकय हथांकय बोट्टं एत्तायि
चोव्ते मासि।।

पंचवे मासि नांक, कान, दोळे
दांत, नंकूट, लिंग जत्तायि क्रमारि।।

कन्ना वेजु, पृष्ट भागु (गुदम्) गाण्डि
आवसूले बोंबूलेचि वार जत्ता
संचे महिनेन
रोम, केस अनि देह पूर्ण जंचाक
वरलेले अंगयी जत्तायि सप्त मासान्तु।।

मातृ कुंभीत असचो तो जीवु
तिजे बोंबूले वारा वटेन मेळचे
आहारु खावनु वडता
तिजे वार हथान गोज्जु कोरनु धर्ता।।

जन्मजन्मान्तर जावनु केलेले
कर्माचे सर्व उडगासु एत्ता, जीवु रडता।
देवा लगी मगून घेत्ता सत्य करता
तुका शरण पांवता म्होणु संगता।।

भूमि स्पर्श केल्यारि मगीरि
संगिले सग विसर्ता।।
"पुनरपि जननं पुनरपि मरणंम
पुनरपि जननी झठरे शयनम्"
ह्यी प्रक्रिया जन्मान्तर जावनु
जीवु करता असा यें सत्य तं।।

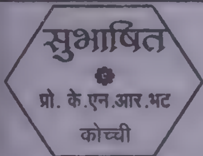
बायलाँ खातिर (ददल्यांकय) - उषा आर. भट, हैदराबाद

सामग्री

1. नर्लाचि सोयि - 2 मूष्टि
2. सुक्कि मिरसांग - 10 (कुटके केल्लेलि)
3. जीवि मिरसांग - 2 (कुटके केल्लेलि)
4. चिंचांब - 1 अवळ्या तुतलें
5. मीट - आवश्याक
6. सस्सम, तेल, जीरें, हींगु, करबेवु आदि फण्णाक

वॅयरि एक धोर्नु तीनि थांयि संगिल्यो सामग्रियो वट्टूनु काणु चिंचांबा उदकान्तु मेळसाव्नु, मीट अनि तें, सोयि वट्टिल्यान्तु मिश्रण कोर्नु सठ्ठें जाव्नु वॅयरि संगिले सामग्रियो काणु फण्ण घाल्नु दवर्का।

मट्ण्याचि ना चॅण्याचि दाळि, एक घंट्याक उदकान्तु फुग्गोव्नु, उदाक पॅर घाल्नु, मिट्टयि घाल्नु, सुक्कें जाव्नु खरखरी वट्टूनु, सान सान घरियो जाव्नु तोव्नु काणु, तंबळेन्तु बुड्डसि सोडका। अर्द्ध घंटो जल्यारि, तंबळि पूरायि, घार्यानि पिल्लेलि अस्तलि। खाण जव्नूयि, जेवणाक रंदयि जव्नूयि यी घरियो रुचिकर अस्तल्यो।



"शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा
ऊहापोहो/र्थ विज्ञानं तत्वज्ञानं च धीर्गुणाः
- वाल्मीकि रामायणम्।।"

एकल्यान उच्चारण करचे उत्तरान्तु सुकूनु तगेलो संस्कारु, आचारु, विचारु, वंश-कुल महिमा, मनःपक्वता, पाण्डित्य इत्यादिक संज्ञूयात्। लक्षण सम्पन्न, माधूर्यगुण भूषित आणी सन्दर्भोचित अरसुकायि एक्केक उत्तॅरयिं म्हुण ऋषि कल्पना। उत्तरांक अवश्य अरसुका जल्लेलिं आठ गुण वाल्मीकि अस्सि संगता - शुश्रूषा (कयरिं मनान्तु कॅरुक जिज्ञासा), श्रवणं (श्रद्धेन, क्षमेन अयकॅप), ग्रहणं (अयकिल्लें सर्मोच मनान्तु वॅरप), धारणम् (अयकिल्लें उडगासान्तु दवॅरप), ऊहम (अर्थाकिल्यान्तुलि युक्ति चिन्तॅन कॅरप), अपाहम् (संशय निवारण कॅरप), अर्थविज्ञानम् (गूढ-अन्तरार्थ अनुसन्धान करनु ग्रहण कॅरप), तत्वज्ञानम् (मूल-गुप्त तत्व पुनः चिन्तन द्वारा दिक्कूनु काडॅप) यीं तॅ तीं आठ गुण। हनुमन्ताले रूप एक वानराले जल्यारीयि, तगेले उत्तरांतु यीं अट्टयि गुण दृष्टि पडता जल्लेले निमित्ति, तो केवल एकु वानर रूपी मनीषु नयि, संस्कार सम्पन्न व्यक्तित्याचो धन्नि तॅ - अस्सि सीता देवी संगता। ☺

सूरदास भजन

- के. अनन्त भट, कोच्ची

रे मना ! कृष्ण नाम जपु धरि।
गुरूलें वचन तूं सत्य जाण जा,
साधु समागमु करि।

सीख समझ तूं भक्ति भागवत
सांगचे सांगौंचे कोर्का।
कृष्ण नाम विना जन्मु व्यर्थ हो
कसल्याक जीवन धोर्का।।

कृष्ण नाम रस होळता पळे तूं,
तान्नेन पीवनु भरि।
सूरदासु हरि शरण पळौनु,
जन्मु सफल तूं करि।।

ह्वे भजन 1978 क मंगळूरु A.I.R. न्तु प्रस्तुत केल्लेलें।

गायिका - सावित्री गुलवाडी

"भांगरभूंय" कोंकणी दिनपत्र
वच्चायि ओणलैन:
epaper.thegoan.net

नारायणा...

- श्रीकर भट. बी. कोच्ची



परम दयाघन नारायणा
परम दयाघन नारायणा
तु विना शरण कोण ना
देवा मिजे वयरि करि करुणा

साष्टांग करता नमस्कारु तुक्का
तु विना म्हाका जीवन ना
करता भक्तीन तुगेलें स्मरण
करता वन्दन तुगेलें चरण

तुगेलें दिव्य रूप दर्शनान
मेळत्ता मू अग्का जन्मसाफल्य
पावन गोश्रीपुराधीश्वरा
रक्षण करि म्हाका जगदीश्वरा।

अविकिल्लि रस्पति

"तुम्का कळता वे ? सगटेंयि मक्का देवा समान तं लेकतायि !"
"कस्सि तें ? इत्याक तें ? "
"तंका कसलेंयि/इत्तेंयि आवश्य पळयारि नत्तना, मेझे पसून तंका खवर अरसूचे ना।"

वागान केल्लोलो उपकारु

- वसन्तकुमारी पी. एस., कोच्ची

वंगदेशान्तु रामचन्द्रु म्हळोलो खाण कोर्नु विक्कूचो एकु मामु अस्सिलो। एक दीसु खोट्यान्तु भोर्नु खाणय घेव्नु सक्काणीच तो व्यारक गेल्लो। चोंवकूनु चोंवकूनु एक रन्नान्तु पवलो। तो वेळु भित्तरि एक खाण सरि विक्किलेना। रन्नाचे पेळ्तान्तु एकु सानु गांवु अस्स। थंगा वोच्चूनु चोंव्या म्होणु तो रंन्नान्तु चोळ्ळो। स्वल्प चंवकिल्लोयि तज्जे देहारि एक वागान उडकि मर्लि। जीवु मेळ्यारि भीक मग्गीन म्होणु लेक्कूनु सर्व शक्तीयि काणु तो धवलोलोयि एक व्होळ्ळे फोण्डांतु पोळ्ळो। "अय्यो ! इत्ते कि ये पाताळाक वच्चि वाट वे ?" म्होणु लेक्कूनु चारीयि तन्तु चोई, एक गुहा सरि एकि वाट दिकीलि। तन्तूल्यान स्वल्प चंवकिल्लोइ कोणकि सग्ग उल्लेयताई अयकिले।

एदेचि चोर, तेद्दूस तन्नि फरलेले द्रव्य वण्टे घलतायि तं। तो निप्पूनु रब्बीलो। एदी घडि वच्चानीकयि वेगळेचि एक वट्टेन चोर भायर गेल्ले। रामचन्द्रमामु चोरानि रब्बिल्ले कडे वच, साक भरि भंङ्गराचो दुड्डु ! चोरानि गेल्लेले वट्टेन तो लोवु भायर एयलो। अनि सीदा राजधानीन्तु गेल्लो। रय्याक दिक्कूनु चोरॅ रव्वूचो स्थायु संगीलो। रय्यान राजकिंङ्करांक पेट्टोव्नु चोरांक सग्ग धोर्नु कारागृहान्तु घल्ले। रय्याले वगेक रामचन्द्रमम्माक चांग पारितोपिकय मेळ्ळे। तश्शि एक वागा खत्तीरि रामचन्द्रमम्माले दारिद्र्य ना जल्ले।

*

कोंकणी प्रसारण - आकाशवाणी कारवार : (सग्ग बिरेस्ताराचे संजे 5.00 - 5.30)

धारवाड (765 Khz) MW: (सग्ग सोमाराचें रत्ति 10.00 -10.30 जाई-जूई कार्यक्रमु)

तृश्शूर (630 Khz) MW, कोपिकोड (684 Khz) MW : (मंगळाराचे संजे 5.00 धोर्नु 5.15 पर्यन्त)

रस्पनि * आर. के. प्रकाश, पळ्ळुरु



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

कण्सो बाबु - डॉक्टर माम, पडचे कूडान्तु राति एक घोडो दंचे वरि दिस्ता। वखद इतेंय ?

डॉक्टर : प्रश्नु ना, पडचे कूडान्तुले घडिकाराचे वाटरी परतील्या पूरो।

* * * *

पूर्णीमा : डॉक्टर मामु, म्हाका केन्नाय खंव्याक न्यूडिल्स जांव्का। पेज-सीत कांइ नक्का। यें रोगु वे ?

डॉक्टर - प्रश्नु ना, वखद दित्ता। अनिक थाकूनु न्यूडिल्स चिन्तण कोर्चे वेळेर गाइंडळाक उडगासु केल्यार पूरो। आपिळ ना पेर विन्दूनु वोंडो खांव्चे वरी तं न्यूडिल्स।



परणी म्हण्णी

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

* कोपु एयल्यारि कापु काडि।

* कडिये घराक अंग्टे माड।

* कर्मांतु बरेयलेलें
जन्मान्तु सुंटना।

* करडीलो मोगु जीवु खाव्नु वत्ता।

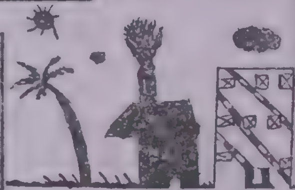
* कष्टकालारि बेस्सलि
माणायिं थांयि शत्रु।

आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

"रथु मळबार धांवता,
सारथि भुंयचेरि रब्बीला।" सोणो

चेर्डुवालि चित्रँ





कु.अर्जित जे.भट (8)। कोच्ची जितेन्द्रनाथ भट एस. अनि रिनु हांगेलो सुपुत्र।

स्मरण करूंया हरीली करुणा

- जितेष आर. कम्मत, कोच्ची

अनिश्चल मनांक दुःख येवनु पांवता।
निश्चल भक्तींतु आनंदु येवन भरता।।
करी तू ध्यान देवाले चरणारि।
स्मरण करूया हरीली करुणा।।
सत्याचो उज्वाडु देवु दकेयता।
शरण दिंवचे ते देवाक पोळोव्या।।
म्हणूंया आम्कां देवाले गुण गान।
स्मरण करूया हरीली करुणा।।
धर्माचे रक्षण कर्मु आमगेलो।
धर्माची वाट स्वीकार करूया।।
करूयां देवाले स्थापन मनांतु।
स्मरण करूया हरीली करुणा।।
सोधी मनांतु देवाक पोळोंवचाक।
सर्वव्यापी तो मनांतूचि मेळ्ता।।
करूया देवाली सेवा निरंतर।
स्मरण करूया हरीली करुणा।। *

पाण्डुरंगालो अनुग्रहु

- टी. उमेश भट, कोच्ची

पावलो हांव पण्डरपुराक
आषाढ एकादशि महोत्सवाक
मनोभिलाष दरिशन घेंव्चाक
पाण्डुरंगालो अनुग्रहु मेळ्चाक

पवित्र चन्द्रभागे स्नान कोर्नु
पाण्डुरंगालें नाम जपु कोर्नु
नमस्कारु घल्लो चरणारि पोणु
कृपाकटाक्ष मगिलें रोणु

भक्त जन प्रसन्ना पण्डरीनिवासा
अभीष्ट वरदा पुरन्दर विठळा
देवा स्वामी करुणा विलासा
दया मेझेरि जांका विठळा। ❖

थिपकें

- पी.एस. प्रदीप, कोट्टयम

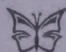
जल्मखुण लाशें, पाचवें, पिंगसे रंगा थिपकें
मनीसानी मनशा खातीर सुयेन-
"फॅशनान" करचीं कलाकृति "Tattoo"
लाशें भाग्य खंय, जल्यारि "Tattoo"
रगत अपवित्र करता।
आत लाशें वुणे, "Tattoo" अधिकाधिक

अम्मा

- कु. वी. राधिका कम्मत, कोच्ची

अम्मा मिग्गेलि अम्मा
चांगि चांगि अम्मा
चांग संगून दिम्ची
सग्ग कोरनु दिम्ची
चांगि चांगि अम्मा।

सनी भरकूण एयल्यारि
म्हका वोयदालगि व्हरतली
निंवगील्यारि सग्ग दित्तली
उदाक खाण दित्तली
चांगि चांगि अम्मा।



पक्षि परिचय

गोश्रीपुरम हरिकुमार

मोरु बेस्ला माडारि
कीरु दिस्ता मडियेरि
ढेंकारो कायळो मड्चारि
घोणी उब्बता मळ्बारि।।

परवो भोंवता भूंयचेरि
व्हिर्झूळो दिस्ता वोंयचेरि
कायळो रे ते बांयचेरि
कुंकड खोट्या उंच्चारि।।

दिसना पक्को पक्यारि
घुघूम दिस्सा समयारि
मडवोळि मू ते जगलेरि
ढोंक तळ्या फतरीरी।।

खंयि गेल्लि कुम्बास्तरि
कोंग्गूळि बेसल्या वणतीरि
गुर्बजी मू ते सरियेरि
उब्बून गेल्ली साळरि।।

नव ब्रह्माण

(श्रीलिंगमहापुराणानुसार)

मरीचि, भृगु, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष, अत्रि, वसिष्ठ

मधुरत्रय

(श्रीलिंगमहापुराणानुसार)

तूप, दूद, म्होवु

केरळ - कर्णाटक - गोंय

परणि म्हण्णी - ग्यादी/आदगत - ओंपार/म्हण्णी
हत्तान्तु दवरप - उडगीरें - केळवण
उपमाव - उपमा/तिखसे शीरें - उपीट

बेब्या सत्तें - आळाम्बे - अळमें
आळें - उमाणें - कुवाडें
कोब्बु - कब्बु - ऊस

कोंकणी नाटक ❁ 27.4.19, बालाजी मन्दिर, वाशी (मुम्बै) :- कोंकणी त्रिवेणि कला संगम, मुम्बै हंगेले "हून उदका घोटु"।

❁ 3.5.19, श्री वेणुगोपाल कृष्णस्वामी देवस्थान, चोन्नत (Chendamangalam) :- पाण्डुरंग कलाकेन्द्रान प्रस्तुत केल्लें "अशोकवनान्तुली सीता" अनि "श्रीकृष्णसुदामा"

❁ 11.5.19, संस्कृती भवन, तिरुवनन्तपुरम :- पाण्डुरंग कलाकेन्द्रान प्रस्तुत केल्लें "श्रीकृष्णसुदामा" (भारतीय ज्योतिष पठनकेन्द्रं संस्थेचे 17 वें वार्षिकानुबन्ध जाव्नु)

❁ केरळा कोंकणी कळ्चरल फोर्ट हंगेले "रावु मम्माले व्होराण" नाटक 18.04.19 - पच्चाळम इरट्टकुळङ्गरा काट्टुङ्गल भगवती देवस्थान (उत्सवान्तु), 20.04.19 - कोषञ्चेरी श्रीकृष्णस्वामी देवस्थान (भागवत सप्ताहान्तु) अनि 30.04.19 - कोटयम ताषत्तङ्ङाडि देवस्थानान्तु (उत्सवान्तु) खेळेय्लें।



Mangala Marine Exim India Pvt. Ltd.
CCXVI / 368, Bhat Memorial Building
Thoppumpady, Cochin 682 005, Kerala, India
Tel: +91 - 484 2231096, 2231730, 2233369, 2238393 - 95
Fax: +91 - 484 2232750
Mail: mangala@mangalagroup.com
www.mangalagroup.com

Reg. No. KERKON/2012/45527
Vol. No. 8 Issue No. 6
Rs. 10/- No of Pages: 20 **SPANDAN**
Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI

Registered KL/EKM/732/2018-20
Licence No. KL/CR/EKM/WPP-22/2018-20
Licensed to Post Without Prepayment
Date of Posting 10. 06. 2019

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph: 2350960 and Published at 8/28, Santheri, 1st Floor, Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682 002. Editor - Suresh A. Shenoi